Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

यथार्थबोधः एक अध्ययन

पूनम
शोधार्थी, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

Article Info
Volume 6, Issue 2
Page Number : 36-40

Publication Issue :
March-April-2023

Article History
Accepted : 01 April 2023
Published : 10 April 2023

शोधसारांश– यह सच ही कहा गया है, कि साहित्य समाज का दर्पण होता है, क्योंकि साहित्य के द्वारा ही किसी भी युग में तात्कालिक सांस्कृतिक जीवन का वास्तविक ज्ञान हमें प्राप्त होता है। क्योंकि साहित्य समाज से सीधा जुड़ा रहता है और समाज में जो भी घटनाएं घटित होती हैं, वही साहित्य में लिखी जाती हैं, अतः सामाजिक अनुभूतियां और संवेदना ही साहित्य का विषय बनती हैं और सामाजिकता का वास्तविक ज्ञान ही यथार्थ है। अतः साहित्य को सही तरह से पहचानने के लिए यथार्थवाद या यथार्थ को जानना अति आवश्यक है। इस आलेख के माध्यम से हम यथार्थबोध को विस्तार से जानेंगे।

मुख्य शब्द– यथार्थबोध, यथार्थ, वास्तविकता, वास्तविक आदि।

परिचय– हिंदी साहित्य के क्षेत्रा में यथार्थवादी चेतना का उद्भव आधुनिक युग में हुआ है। प्रेमचंद युग से हमें यथार्थवाद का वास्तविक स्वर दिखाई देता है, उसके पश्चात से लेकर स्वातंत्रायोत्तर युद्ध काल तक के कथाकार जीवन में यथार्थवाद हमें लगातार दिखाई देता है। इसी क्रम में महिला कथाकार भी यथार्थ के निरूपण में पीछे नहीं रही है और इन्हीं कथाकारों में उषा प्रियंवदा, अलका सरावगी, रमणिका गुप्ता आदि तमाम नाम शामिल हैं, जिन्होंने मानव जीवन की विडंबनाओं और जटिलताओं को संवेदना के धरातल पर यथार्थ पर अभिव्यक्ति प्रदान की है। यथार्थवादी कथाकारों ने वही लिखा है जो उन्होंने अपने आसपास अनुभव किया देखा है जैसे उषा प्रियंवदा ने लिखा है– "कि मैं वही लिखती हूं जिससे मैं परिचित हूं,....''

प्रेमचंद के समय में कहानी में यथार्थवाद का आरंभ हुआ। प्रेमचंद पहले क्रांतिकारी कहानीकार हैं जिन्होंने हिंदी कहानी को कल्पना लोक से निकालकर यथार्थ की ठोस भूमि प्रदान की और उन्होंने सबसे पहले हिंदी कहानी के शिल्प और शैली को नया रूप दिया। हिंदी कहानी में पहली बार पीड़ित शोषित दलित और मजदूरों की समस्याओं का चित्राण प्रेमचंद ने किया है।

यथार्थ – यथार्थ शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द 'रियल' का समानार्थी है, जिसका अर्थ है वास्तविक (वस्तु संबन्धी)। यथार्थ शब्द का उद्भव दो अक्षरों के मेल से हुआ है "यथा" और "अर्थ"। यथा का हिंदी मतलब होता है 'जैसा' और अर्थ का मतलब होता है 'वस्तु, तत्व, द्रव्य, पदार्थ' आदि। संसार की प्रत्येक वस्तु जिसका अनुभव हमें अपनी इन्द्रियों द्वारा होता है, यथार्थ कहलाती है। सामान्य रूप से यथार्थ का अर्थ होता है ''जैसा होना चाहिए ठीक वैसा, उचित, वास्तविक, सच्चा''। रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित मानक हिंदी कोश मैं यथार्थ का अर्थ बताया है– जो अपने अर्थ आदि के ठीक अनुरूप हो, ठीक, उचित, जैसा होना चाहिए ठीक वैसा ही, वाजिव। इसी प्रकार नागेंद्र द्वारा संपादित साहित्य कोश में यथार्थ का अर्थ बताया है– जिसका अस्तित्व वास्तव में है।

यथार्थवाद का अभिप्राय– यथार्थवाद (रियलिज्म) 2 शब्दों यथार्थ (वास्तविक) और वाद (सिद्धांत) के योग से मिलकर बना है जिसका अर्थ है "जीवन की सच्ची अनुभूति और वास्तविकता का सिद्धांत"। यथार्थवाद भौतिकवादी जगत को मानता है और आदर्शवाद के द्वारा जगत को मिथ्या कहने वाली भावना का विरोध करता है। साहित्य जगत में यह सोचने का एक विशिष्ट तरीका है, जिसके अनुसार लेखक दुनिया और अपने समाज में हो रहे परिवर्तनों की वास्तविकता को अपनी कलम द्वारा सजीव चित्रित करता

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

है। यथार्थवाद के अनुसार मनुष्य को अपने चारों ओर के वातावरण का ज्ञान होना चाहिए और उसे जानकारी होनी चाहिए कि वह उस वतावरण को परिवर्तित कर सकने में सक्षम है या नहीं, और इसी ज्ञान के अनुसार ही उसे अपने कार्य करने चाहिए, जैसे डॉ. भीमराव आंबेडकर को अपनी जाति के लोगों की वास्तविकता का पूंर्ण ज्ञान था और उनकी परेशानियों से भी वे भलीभाँति परिचित थे और वे यह भी जानते थे कि दलित जाति के लोगों की यथार्थ परेशानियों को कैसे बदला जा सकता है। इसी तरह कई क्रांतिकारी लेखक हुए हैं जिन्होने अपनी लेखनी के बल पर समाज की तमाम बुराइयों को उजागर करके समाज को उसे दूर करने को मजबूर किया है। वास्तव में साहित्य में यथार्थवाद आधुनिक युग की देन है। कला और साहित्य के क्षेत्रा में यथार्थवाद का उद्‌भव लगभग 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्रांस में हुआ था और यथार्थवाद पर सर्वप्रथम विचार प्रकट करने वाले मर्क्यू फ्रांसे का नाम लिया जाता है, उन्होंने 1828 ईसवी में यथार्थवाद पर एक निबंध लिखकर कला और साहित्य के क्षेत्रा में इसे स्थापित किया था। यथार्थवाद के मूल में वैज्ञानिक आविष्कार और औद्योगिक क्रांति विद्यमान है, जिसने जीवन और जगत को देखने की एक नवीन दृष्टि प्रदान की और नई सामाजिक व्यवस्था को जन्म दिया। लगभग सभी आधुनिक दौर की महिला कथाकारों ने अपनी कहानियों में यथार्थबोध का उल्लेख किया है।

यथार्थवाद की परिभाषाऐं– यथार्थवाद एक विश्वास का सिद्धांत है जो जगत को जाँच–परख कर वैज्ञानिक तरीके से स्वीकार करता है और वह जगत को वास्तविक मानता है।

स्वामी रामतीर्थ– इनके अनुसार यथार्थवाद स्वीकारता है कि हम जो कुछ भी अपनी इंद्रियों के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, उसका कारंण वस्तुओं का एक यथार्थ जगत है।

जे.एस.रॉस– इनके अनुसार यथार्थवाद संसार को उसके मूलरूप (जिसमें वह दिखायी देता है) में स्वीकार करता है।

बटलर– इनके अनुसार यथार्थवाद का प्रमुख विचार यह है कि वाह्य जगत की सभी वस्तुऐं (पदार्थ) वास्तविक हैं और उनका अस्तित्व उसे देखने वाले से अलग है अर्थात अगर उन पदार्थों को देखने वाले या महसूस करने वाले न हों तब भी उन पदार्थों का अस्तित्व रहेगा।

कार्टर वी. गुड– इसके अनुसार वास्तविक या भौतिक जगत चेतन मन से स्वतन्त्रा रूप से अस्तित्व रखता है तथा उसके गुण और प्रकृति उसके ज्ञान से ज्ञात होते हैं।

डॉ. त्रिभुवन सिंह– किसी वस्तु का ज्यों का त्यों ग्रहंण करना ही यथार्थवाद का चित्राण है परन्तु सहित्यकार फोटोग्राफर नहीं होता है, वह निर्माता होता है। साहित्य में जो कुछ भी यथार्थ में चित्राण किया जाता है वह वस्तुओं का तद्वत चित्राण न होकर संषलेषणात्मक चित्राण होता है। साहित्यकार मात्रा उसका चित्राण ही नहीं करता वल्कि चुनाव भी करता है। वह प्रस्तुत दृश्य को ज्यों का त्यों नहीं चित्रित करता वल्कि अपनी रूचि के अनुसार वस्तु के दृश्यों को नये सिरे से सजाता है और फिर उसका चित्राण करता है। यही कारण है कि एक वस्तु का विभिन्न साहित्यकारों द्वारा अलग–अलग तरीकों से विश्लेषंण एवं चित्राण किया जाता है। इस प्रकार वस्तु जगत और भाव जगत के सत्य में अन्तर दिखता है।

बाबू गुलाबराय– इनके अनुसार हमारे सामने नित्यप्रति घटने वाली घटनाऐं ही यथार्थ हैं। उसमें धूप–छाँव, पाप–पुण्य और सुख–दुःख आदि मिश्रित रहता है। यह सामान्य भाव भूमि के धरातल पर रहकर वर्तमान की वास्तविकता से सीमाबद्ध रहता है।

प्रेमचन्द– इनके अनुसार आजकल के लेखक अनोखे ओर विशिष्ट चरित्राों की खोज में अपनी शक्ति नष्ट कर देते हैं। जबकी उनको चाहिए कि वहाँ जाऐं जहाँ देश की वास्तविक आबादी रहती है और उन सीधे–साधे लोगों का वर्णन करो, यही यथार्थवाद है।

लुकाच– इनके अनुसार लेखक अपने आसपास जो भी देखता है उसका निडरतापूर्वक पूरी ईमानदारी व निश्पक्षता से वर्णन करना ही यथार्थवाद है।

एंगेल्स– इनके अनुसार– "मेरे विचार से 'यथार्थवाद' का आशय यह है कि लेखक विवरणों और ब्यौरों के सत्य प्रस्तुतीकरण के अलावा प्रतिनिधि पात्रों को प्रतिनिधि परिस्थितियों में सच्चाई के साथ चित्रित करे।

नगेन्द्र– इनके अनुसार यथार्थवाद से तात्पर्य उस दृष्टिकोण से है जिसमें कलाकार अपने व्यक्तित्व को यथार्थ संभव तटस्थ रखते हुए वस्तु को, जैसी वह है वैसी ही देखता है और चित्रित करता है अर्थात् यथार्थवाद के लिए वस्तुगत दृष्टिकोण अनिवार्य है।

शिवकुमार मिश्र– इनके अनुसार सच्चे तथा महान यथार्थवाद का लक्ष्य समाज, जीवन तथा मनुष्य के जीवन के यत्रा–तत्रा बिखरे स्फुट अंशों को ही परखने और मूर्त करने का नहीं होता; वरन् उनकी दृष्टि इनके संपूर्ण रूप को उभारने की ओर रहती है। वह उन्हें इनकी 'संपूर्णता' में ही देखने पर बल देता है।

अतः वस्तु या परिस्थिति की वास्तविक तस्वीर दिखाना ही यथार्थवाद है।

यथार्थवाद की विशेषताएं– यथार्थवाद की निम्नलिखित विशेषताएं हैं–

- यह साहित्य की एक विशेष चिंतन पद्यति है। इसके अनुसार साहित्यकार या लेखक अपने समाज और वाह्य जगत में होने वाले परिवर्तनों एवं घटनाओं का यथातथ्य चित्राण करता है।
- यथार्थवादी जीवन की सुन्दर घटनाओं के मुकाबले असुन्दर घटनाओं का वर्णन करने को बहुत महत्व देता है।
- संसार के लगभग सभी साहित्यों में यथार्थवाद मौजूद है। अर्थात यह सर्वव्यापी है।
- यथार्थवाद संसार में क्रांति, परिवर्तन और सुधार का कारक है।
- यथार्थवाद के मूल में औद्योगिक क्रांति एवं वैज्ञानिक आविष्कार मौजूद हैं। इसके द्वारा ही जीवन को देखने की नवीन दृष्टि प्राप्त हुई है जिससे एक नई सामाजिक व्यवस्था ने जन्म लिया है।
- यथार्थवाद में यथार्थ (इन्द्रियों द्वारा महसूस की जा सकने वाली वस्तु) ही सत्य है।
- यथार्थवाद आंगिक सिद्धांत को मानता है, जिसकी वजह से संसार में सभी नियमों, विचारों, परिस्थितियों आदि में परिवर्तन होता रहता है।
- यथार्थवाद यांत्रिाक होता है अर्थात संसार में नियमितता का होना परम आवश्यक है।
- यथार्थवादी विचारधारा अवलोकन, निरिक्षंण तथा प्रयोग पर बल देती है। यह एक वैज्ञानिक विचारधारा है।
- यथार्थवादी ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षंण पर जोर देते हैं।
- यथार्थवाद के अनुसार जगत ही वास्तविक सत्य है और जगत नियमित है।
- यथार्थवाद वर्तमान एवं व्यवहारिक जीवन को ही मान्यता देता है। यह उन नियमों, आदर्शों को महत्व नहीं देता है जिनका व्यवहारिकता और वर्तमान से संबन्ध नहीं होता है।
- जयशंकर प्रसाद के अनुसार यथार्थवाद की विशेषताओं में प्रधान है लघुता की ओर साहित्यिक दृष्टिपात। उसमें स्वभावतः दुःख की प्रधानता और वेदना की अनुभूति आवश्यक है। लघुता से मेरा अभिप्राय है साहित्य के माने हुए सिद्धांत के अनुसार महत्ता के काल्पनिक चित्राण से अतिरिक्त व्यक्तिगत जीवन के दुःखों और अभावों का वास्तविक उल्लेख।
- नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार "यथार्थवाद वस्तुओं की पृथक् सत्ता का समर्थक है।
- यथार्थवाद यूरोपीय साहित्य की देन है। इसका उद्भव फ्रांसीसी क्रांति के परिणामस्वरूप हुआ। डॉ. त्रिभुवन सिंह के अनुसार– इसका विकास मुख्यतः पाँच बातों से प्रभावित माना जाता है– 1. डार्विन का विकासवाद, 2. फ्रायड का मनोविश्लेषण, 3. मार्क्स का अर्थविज्ञान, 4. यूरोपीय यथार्थवादी उपन्यास, 5. वैज्ञानिक प्रभाव।

यथार्थवाद का साहित्य से संबंध– यथार्थवाद का साहित्य से गहरा संबन्ध होता है। ज्यादातर साहित्य में वही लिखा जाता है जिसे साहित्यकार अपने चारों ओर महसूस करता है और देखता है। साहित्यकार अपने समय

की घटनाओं का लिपिबद्ध चित्राण करते हैं जो समय के साथ इतिहास बन जाती हैं और आने वाला समाज उन्हीं घटनाओं की अच्छाई और बुराई को जानकर उसकी बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करता है जिससे समाज में परिवर्तन होते हैं। इसी प्रकार पुरानी वैज्ञानिक खोजों के बारे में जानकर उसमें अपने अनुसार परिवर्तन करके किसी भी आविष्कार की गुणवत्ता को वताया जाता है। अतः यथार्थवाद के साथ साहित्यकार का चोली–दामन का साथ है। अगर साहित्यकार अपने समय के यथार्थ को वर्णित न करें तो आने वाला समाज पिछली पीढ़ी की अच्छाई और बुराइयों को नहीं जान पाएगा और न ही समाज में कोई सुधार संभव हो पाएगा। अतः संसार की प्रगति में यथार्थवादी साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

यथार्थ, साहित्य एवं कला की अभिव्यक्ति का बुनियादी विषय रहा है। देश–विदेश के साहित्य और कला में यथार्थ का चित्राण प्रारम्भ से ही होता रहा है। साहित्य तथा कला स्वभावतः यथार्थजीवी है। हिन्दी साहित्य में 'यथार्थवाद' यूरोपीय साहित्य की देन है। लेकिन हिन्दी साहित्य के भीतर यह विचारधारा के रूप में नहीं मिलता जैसा कि यूरोपीय साहित्य में मिलता है।

आधुनिक गद्य साहित्य की लगभग सभी विधाओं का आविर्भाव भारतेन्दु युग में हुआ था। लगभग इसी युग से हिन्दी साहित्य में यथार्थवादी चेतना के समावेष और विकास का आभास होता है। हिन्दी कथा–साहित्य और यथार्थ का अटूट सम्बन्ध रहा है। प्रेमचन्द यथार्थ को कथा–साहित्य का प्राण मानते थे। वहीं हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानना है कि "कविता यथार्थवाद की उपेक्षा कर सकती हैं, संगीत यथार्थ को छोड़कर भी जी सकता है, पर उपन्यास और कहानी के लिए यथार्थ प्राण है।"

अतः इस प्रकार हम देखते है कि आधुनिक काल में कोई भी साहित्य की रचना यथार्थवाद के बिना संभव नहीं है और यथार्थवाद आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रांण है।

निष्कर्ष– हिंदी साहित्य में सर्वप्रथम यथार्थवाद प्रेमचंद के साहित्य में दिखाई देता है। उसके पश्चात 21वीं सदी में लगभग सभी महिला कथाकारों की कहानियों में यथार्थ बोध के दर्शन होते हैं। क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है और 21वीं सदी के साहित्य में समाज में जो कुछ भी 21वीं सदी में घटित हो रहा है वह दिखाई पड़ता है। यथार्थ जैसा कि पहले बताया जा चुका है वास्तविकता, वस्तु या पदार्थ के लिए प्रयुक्त होता है। अतः संसार की प्रत्येक वस्तु जिसका अनुभव हमें अपनी इंद्रियों द्वारा होता है यथार्थ कहलाती है। यथार्थवाद साहित्य की एक चिंतन पद्धति है जिसके द्वारा साहित्यकार अपने समाज और बाह्य जगत में जो कुछ भी घटित होता है उसका यथार्थ चित्राण करते हैं। आधुनिक गद्य की लगभग सभी विधाओं का आरंभ भारतेंदु युग में हुआ। 21वीं सदी की महिला कहानीकारों ने अपनी कहानियों में तात्कालिक समाज की परिस्थितियों का बखूबी वर्णन किया है। महिला कलाकारों ने समाज की बुराइयों को भी उठाया है और आधुनिक दौर में रिश्तो में हुए परिवर्तनों को भी अपनी कहानियों में बखूबी चित्राण किया है। 21वीं सदी की महिला कथाकारों की कहानियों में दांपत्य जीवन, विवाहेत्तर संबंध, माता पिता, भाई–बहन मित्रा एवं अन्य संबंधों पर बखूबी लेखनी चलाई है और आजकल के समाज में रिश्तो में जो भी दरारें आई हैं उनको बखूबी प्रदर्शित किया है।

संदर्भ

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2012, पृ० 346
2. कुमार कमलेश– आदिवासी विमर्श अवधारणा और आंदोलन पृष्ठ 15
3. कृपाशंकर पाण्डेय – हिन्दी कथा साहित्य में यथार्थबोध के विविध रूप, समीक्षा प्रकाशन, बस्ती, संस्करण 1996, पृ० 29–30
4. जयशंकर प्रसाद – काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध, पृ० 120 13.

5. डॉ. नूरजहाँ – हिन्दी कहानी में यथार्थवाद, अभिनव भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 1976, पृ. 28
6. डॉ. सत्यकाम – आलोचनात्मक यथार्थवाद और प्रेमचन्द, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1994, पृ. 6
7. डॉ. सुरेश सिन्हा – नई कहानी की मूल संवेदना, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली, संस्करण 1961, पृ. 175–76
8. डॉ. सुरेश सिन्हा – नयी कहानी की मूल संवेदना, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली संस्करण 1961, पृ. 177
9. चन्द्रकान्त बांदिवडेकर– आधुनिक हिन्दी उपन्यासः सृजन और आलोचना, पृ० 52 8.
10. शिवकुमार मिश्र – यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2009 पृ. 18 9.
11. डॉ. त्रिभुवन सिंह – हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स
12. डॉ. एस.पी. खत्री – आलोचनाः इतिहास तथा सिद्धान्त, पृ. 475
13. डॉ. त्रिभुवन सिंह – हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा0लि0, वाराणसी, संस्करण 1997, पृ० 81
14. प्रेमचन्द – कुछ विचार, पृ. 74
15. डॉ. शैला चौहान– कदम आदिवासी समाज एवं संस्कृति पृष्ठ. 11
16. त्रिभुवन सिंह – हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा0लि0, वाराणसी, संस्करण 1997, पृ० 235
17. नंद दुलारे बाजपेयी – आधुनिक साहित्य, पृ. 445
18. त्रिभुवन सिंह – हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स प्रा.लि., वाराणसी, संस्करण 1997, पृ. 303–04
19. द्वारका प्रसाद मीतल – हिन्दी साहित्य के बाद पृ. 230
20. नगेन्द्र – विचार और विवेचन, पृ. 97
21. नगेन्द्र – साहित्य कोश (मानविकी खण्ड), पृ. 431
22. प्रेमचन्द – साहित्य का उद्देश्य, पृ. 142
23. प्रो. रामचन्द्र माली – श्रीकांत वर्मा की कहानियों में यथार्थबोध, पृ. 32
24. बच्चन सिंह – आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2016, पृ. 194
25. रामचन्द्र वर्मा – मानक हिन्दी कोश, पृ. 435
26. रामदरश मिश्र – हिन्दी उपन्यासः एक अन्तर्यात्राा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
27. शिव कुमार मिश्र– यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2009, पृ. 27.
28. शिव कुमार मिश्र– यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2009, पृ. 56
29. हजारी प्रसाद द्विवेदी – विचार और वितर्क पृ. 103
30. शिवकुमार त्रिभुवन सिंह – हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन्स
31. शिवकुमार मिश्र – यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2009, पृ. 25 11.